



भारतीय कूटनीति के विविध आयाम

हेमलता कुम्पावत

सह-आचार्य (राजनीति विज्ञान) सम्राट पृथ्वीराज चौहान,
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर।

शोध सार

विदेश नीति, कूटनीतिक सम्बन्धों के आधार पर राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने का साधन होती है। भारतीय कूटनीति अपने मूल ढांचे को अपरिवर्तित रखते हुए निरन्तरता की ओर अग्रसर है। यह आदर्शवाद से यथार्थवाद, राजनीतिक कूटनीति से आर्थिक कूटनीति, संतुलनकारी शक्ति से स्वयं अग्रणी शक्ति के रूप में स्थापित होने तक की नीति है। पश्चिमी राष्ट्रों की अपेक्षा क्षेत्रीय सहयोग पर बल एवं सहयोग व प्रतिस्पर्धा की नीति पर बल देते हुए स्वयं को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जारी संघर्षों के सम्बन्ध में प्रासंगिक बने रहने की नीति है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात एवं लोकतांत्रिक राष्ट्र होने के नाते भारत ने शांति, सह अस्तित्व, गुटनिरपेक्षता एवं वैश्विक सहयोग को अपनी कूटनीति का आधार बनाया है।

विशिष्ट शब्दावली :- विदेश नीति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, कूटनीति, नेतृत्व, उदारीकरण, परमाणु शक्ति

प्रस्तावना

एक राज्य की विदेश नीति अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण से उसके सम्पर्क का समग्र होती है। विदेश नीति कूटनीति के सन्दर्भ में सरकारी प्रपत्र कार्य के औपचारिक रिकार्ड और सार्वजनिक वक्तव्यों से कुछ अधिक होती है। विदेश नीति विषयक कोई वक्तव्य साधारण और संक्षिप्त हो सकता है, अथवा यह जटिल और विस्तृत हो सकता है। कूटनीति उस प्रक्रिया का परिणाम होती है, जिसके द्वारा कोई राज्य अपने सुविचारित लक्ष्यों और उद्देश्यों को विशिष्ट कार्य प्रक्रिया में परिवर्तित करता है, ताकि वह अपने लक्ष्यों और हितों की प्राप्ति कर सकें। (नार्मन पेडेल फोर्ड एवं जान लिंकन)

राष्ट्रों के अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार को विदेश नीति के माध्यम से समझा जा सकता है। विदेश नीति अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। आधुनिक युग में किसी भी राष्ट्र का अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था से पृथक् रहना सम्भव नहीं है। एक राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अपनी भूमिका का निर्वाह जिस नीति के अनुसार करता है, उसे उस राष्ट्र की विदेश नीति कहा जाता है। क्रेब का मानना है कि विदेश नीति के निर्माता पहले राष्ट्रीय उद्देश्यों की पहचान करते हैं और फिर उनकी प्राप्ति के साधन सुनिश्चित करते हैं।

इस प्रकार अन्तराष्ट्रीय व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए अन्य देशों के साथ कूटनीतिक सम्बन्धों का निर्वाह करना एक जटिल प्रक्रिया होती है।

भारतीय विदेश नीति निर्माण के मूल आधार निम्नलिखित हैं :-

- असंलग्नता की नीति
- शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व एवं विश्व शांति
- पंचशील के सिद्धान्त
- साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद व प्रजातीय विभेद का विरोधी
- साधनों की पवित्रता
- संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन करने वाली नीति
- निःशस्त्रीकरण का समर्थन

भारत में विदेश नीति निर्माण में निम्नलिखित अंग महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं :-

संसद :- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 246 में भारतीय संघ के विदेशी राज्यों से सम्बन्धित मामले सैद्धान्तिक रूप से संसद के अधिकार क्षेत्र में आते हैं।

प्रधानमंत्री व उसका मन्त्रिमण्डल :- संसदात्मक व्यवस्था होने के कारण प्रधानमंत्री व उसका मन्त्रिमण्डल वास्तविक कार्यपालिका होने के कारण विदेश नीति का निर्माण मुख्यतः इनके द्वारा ही किया जाता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद :- यह भी विदेश नीति निर्माण में मुख्य भूमिका का निर्वाह करती है।

गुप्तचर अधिकरण :- भारतीय गुप्तचर विभाग "रा" (८) का मुख्य कार्य विभिन्न देशों से सम्बन्धित राजनीतिक सैनिक आर्थिक सामाजिक आंकड़ें एकत्रित कर विदेश नीति निर्माण प्रक्रिया में सहायता प्रदान करना है।

भारतीय कूटनीति के चरण

1. नेहरू युग :- भारतीय विदेश नीति का आदर्शवादी युग रहा है असंलग्नता नीति का नेतृत्वकर्ता, पंचशील सिद्धान्त का जनक, विश्व शांति व भातृत्व की भावना में विश्वास करने वाला युग था। कश्मीर विवाद, भारत-पाक विवाद, भारत-चीन युद्ध आदि महत्वपूर्ण घटनाओं द्वारा इस युग की विदेश नीति की समीक्षा की जा सकती है।

2. उत्तर नेहरू युग :- इसमें भारतीय विदेश नीति के इस युग का आदर्शवादित्व से हटकर यथार्थ के धरातल पर आने की शुरुआत माना जा सकता है। भारत-पाक युद्ध 1965, 1971 ताशकन्द समझौता, शिमला समझौता, भारत-रूस सन्धि, भारत-श्रीलंका के मध्य कोलम्बो समझौता 18 मई 1974 में इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में परमाणु परीक्षण द्वारा भारत का न्यूक्लियर क्लब में शामिल होने वाला छठा देश बन गया। राजीव गांधी द्वारा 1988 में चीन यात्रा द्वारा भारत चीन सम्बन्धों पर जमी बर्फ पिघलने लगी थी।
3. उदारीकरण युग :- इस समय पूरा अन्तराष्ट्रीय परिदृश्य परिवर्तित हो रहा था इस कारण राजनीति की अपेक्षा आर्थिक हित सर्वोपरि हो रहे थे एवं खुली अर्थव्यवस्था को डब्ल्यू.टी.ओ. के माध्यम से महत्व प्रदान किया जाने लगा। उदारीकरण निजीकरण एवं भूमण्डलीकरण की नीति अपनाने पर बल दिया जाने लगा। लुक इस्ट नीति, गुजराल सिद्धान्त, भारत-चीन के मध्य आर्थिक व व्यापारिक सम्बन्ध, भारत-पाक विवाद आदि महत्वपूर्ण घटनाएँ थी। भारतीय विदेश नीति में 11 व 13 मई 1998 को शक्ति परीक्षण के अन्तर्गत एक नया अध्याय जुड़ा। इस समय भारतीय विदेश नीति का झुकाव पूंजीवादी व्यवस्था की तरफ बढ़ने लगा। अन्तराष्ट्रीय व्यवस्था एक ध्रुवीय व्यवस्था में परिवर्तित हो गई थी।
4. आधुनिक युग :- इस समय भारतीय विदेश नीति में महत्वपूर्ण बदलाव हुए जिसका मुख्य कारण विश्व परिदृश्य में बदलाव था, जैसे आर्थिक मंदी, चीन का तीव्रता से उत्थान, जी-20, आसियान तथा ब्रिक्स देशों के शक्तिशाली होने के कारण एकध्रुवीय व्यवस्था का बहुध्रुवीय व्यवस्था में परिवर्तित होना था। इसी कारण भारतीय विदेश नीति परम्परागत आदर्श तथा मूल्यों की अपेक्षा यथार्थता एवं आर्थिक मूल्यों पर केन्द्रित होती गई। इस समय राजनीतिक कूटनीति, आर्थिक कूटनीति में परिवर्तन होने लगी, आर्थिक आधार, सुधार कार्यक्रम जो 1991 से प्रारम्भ हुए थे उनको और विस्तृत कर आर्थिक उदारीकरण, विदेशी सहयोग व विदेशी पूंजी निवेश आदि प्राप्त करने के उद्देश्यों के अनुसार ढलती गई।

वर्तमान भारतीय कूटनीति के बदलते आयाम

आक्रामक सुरक्षा एवं कूटनीति :- भारतीय विदेश नीति में महत्वपूर्ण बदलाव आया है, अपने राष्ट्रीय हितों के मुद्दों पर यह आक्रामक रुख को अपनाने में पीछे नहीं हटी है, फिर चाहे वह चीन के साथ डोकलाम विवाद पर सेना की कार्यवाही हो, या पाकिस्तान के विरुद्ध सर्जिकल स्ट्राइक हो या फिर म्यांमार में नागा उग्रवादियों के केन्द्र ध्वस्त करने का मामला हो भारत ने सभी मोर्चों पर राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता प्रदान की है।

- नेबर फर्स्ट की नीति एवं कूटनीति :- इसके अन्तर्गत पड़ोसी देशों को प्राथमिकता :- भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय सम्बन्ध मजबूत बनाने, सार्क सेटलाइट जी सेट का प्रक्षेपण करने, लुक इस्ट पॉलिसी के स्थान पर एक्ट ईस्ट पॉलिसी के द्वारा अपनी विदेश नीति को पश्चिमी देशों की बजाय दक्षिण एशियाई देशों के साथ सहयोग को प्राथमिकता देने की नीति अपनाई है क्योंकि भविष्य में वैश्विक आर्थिक व्यवस्था के कर्णधार एशिया व प्रशांत महासागर के राष्ट्र होंगे।
- सांस्कृतिक कूटनीति :- इसके माध्यम से भारत विश्व स्तर पर अपनी सांस्कृतिक धरोहर की पहचान बनाने के साथ अन्य देशों के साथ अपने सम्बन्धों को मजबूत बनाने का प्रयास कर रहा है जैसे पूरे विश्व में संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से योग को प्रचारित करना, बुद्धिष्ट सर्किटों के माध्यम से दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में एवं रामायण टेल के माध्यम से श्रीलंका के साथ सम्बन्धों को मजबूती प्रदान करना, समुद्री सिल्क राड पहल के प्रत्युत्तर में "प्रोजेक्ट मौसम" के द्वारा दक्षिणी पूर्वी शिंघाई देशों के साथ व्यापारिक सांस्कृतिक सम्बन्धों को बढ़ावा देना।
- राजनीतिक कूटनीति से आर्थिक कूटनीति की ओर झुकाव :- आर्थिक उदारीकरण व्यवस्था के कारण भारत की विदेश नीति आर्थिक कूटनीति की ओर झुक गयी है। यही कारण है कि भारत-चीन के सम्बन्ध सहयोग व प्रतिस्पर्धा पर आधारित हो गये हैं। दोनों देशों के मध्य सीमा विवाद होने के बावजूद आर्थिक हितों को प्रधानता देने के कारण दोनों देशों द्वारा व्यापार पर जोर दिया जा रहा है।
- डिजिटल कूटनीति :- डिजिटल कूटनीति का तात्पर्य आधुनिक समय में सोशल मीडिया, इन्टरनेट और ऑनलाइन मंचों के माध्यम से किसी देश की विदेश नीति और अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों को मजबूत बनाना है, ताकि अन्य देशों के साथ सम्पर्क तीव्र, प्रभावी एवं पारदर्शी हो सके। डिजिटल इंडिया अभियान में भी भारत की डिजिटल कूटनीति को नई दिशा, नई सोच एवं नया दृष्टिकोण प्रदान किया है। इसी प्रकार डिजिटल कूटनीति का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष सांस्कृतिक प्रचार है, योग, आयुर्वेद, पर्यटन आदि को सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचारित किया जा रहा है।
- मानवतावादी कूटनीति :- मानवतावादी कूटनीति अन्तराष्ट्रीय संबंधों को अधिक मानवीय और सहयोगपूर्ण बनाती है, चूंकि भारत सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना में विश्वास करता है। प्राकृतिक आपदाओं के समय भारत अनेक देशों की सहायता करके अपनी मानवतावादी कूटनीति का परिचय देता रहा है, जिसका सर्वोत्तम उदाहरण कोविड-19 महामारी के समय भारत ने 'वैक्सिन मैत्री' अभियान चलाकर अनेक देशों को वैक्सीन उपलब्ध कराकर वैश्विक स्तर पर एक जिम्मेदार और सहयोगी राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बनाई है।

- समाजवादी व्यवस्था से पूंजीवादी व्यवस्था की ओर झुकाव :— भारतीय विदेश नीति जो कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात समाजवादी व्यवस्था की ओर झुकी हुई थी वर्तमान में उसका रुझान पूंजीवादी व्यवस्था की ओर हो गया है, यही कारण है कि रूस के साथ हमारे सम्बन्ध इतने घनिष्ठ नहीं रह गये हैं जितने की अमेरिका के साथ हो रहे हैं। इसके साथ आर्थिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों में मजबूती आई है इसका कारण अमेरिका द्वारा चीन के प्रभुत्व को कम करने में भारत का सहयोग प्राप्त करना चाहता है।
- दक्षिण एशिया का नेतृत्व व प्रतिनिधित्व करने की कूटनीति :— भारतीय विदेश नीति एशिया में चीन के प्रभुत्व को कम कर दक्षिण एशिया में अपनी मौजूदगी को प्रदर्शित करने का प्रयास कर रही है, यही कारण है कि एक्ट ईस्ट पॉलिसी व दक्षिण एशियाई देशों को सहायता प्रदान कर अपने राजनीतिक सम्बन्धों को मजबूत बना रहा है, ताकि भविष्य में वह दक्षिण एशिया का नेतृत्व कर सकें।
- अन्तराष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ विश्व जनमत तैयार करना :— भारतीय विदेश नीति का प्रमुख लक्ष्य हो गया है ताकि विश्व में शांति स्थापित हो सकें, यह भारतीय नीति के मूलाधार के अनुकूल भी है।
- संयुक्त राष्ट्र संघ में सुरक्षा परिषद् में भारत की स्थाई सदस्यता के लिए दावेदारी :— भारत संयुक्त राष्ट्र संघ को पुर्नगठित करने व सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्यता के लिए प्रयासरत है। क्योंकि भारत निरन्तर विकास की ओर अग्रसर एक उभरती आर्थिक व्यवस्था व परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारतीय विदेश नीति कूटनीति यथार्थता के धरातल पर अपने राष्ट्र हितों को सशक्त रूप से प्राथमिकता प्रदान कर विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाने व उपस्थिति दर्ज कराने में प्रयासरत है। भारतीय विदेश नीति स्थिरता व निरन्तरता के साथ चलायमान है, जिसमें मूल ढांचे को अपरिवर्तित रखते हुए सम्बन्धों में सक्रियता, उत्साह, तीव्र संवाद विकसित करने की प्रवृत्ति व रणनीतिक साहस व कौशल के स्पष्ट संकेत देखे जा सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. एस.सी.सिंहल "अन्तराष्ट्रीय" आगरा प्रकाशन।
2. डॉ. आर.के.दुबे "दो विश्व युद्धों के बीच अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध" आगरा प्रकाशन।
3. डॉ. पुखराज जैन "भारतीय राजनीतिक व्यवस्था" साहित्य भवन पब्लिकेशन जयपुर।

4. डॉ. ए.पी.अवस्थी "भारतीय शासन व राजनीति"
5. वी.पी. दत्ता (2012) भारतीय विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6. लल्लन सिंह (2018) भारत की विदेश नीति, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली
7. डॉ. महन्द्र कुमार (2020) विश्व राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा